साप्ताहिक

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

समय माया

R.N.I. No.: MP/HIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com
Cell: +91 9425125569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission
In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष : 13 अंक : 40 | प्रति सोमवार, इन्दौर 6 मई से 12 मई 2019 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : 2 रु.

मोदी सरकार की जिद्द सबको जोड़ कर बर्बाद करने की

आधार कार्ड से मोबाइल, बैंक खाते, पेन सबको जोड़ने से अरबों रुपए रोज की डकैती

90% की बैंकों में व पुलिस थानों में शिकायत ही नहीं लेते

सर्वोच्च न्यायालय के आधार कार्ड को अनावश्यक घोषित करने के बाद में भी, शासकीय स्तर पर बिना आधार कार्ड बनवाए आपका ना तो आयकर खाता या पैन नंबर बनेगा ना चलेगा फिर आसानी से मोबाइल नंबर व बैंक खाते के नंबर को जोड़कर ही आपका बैंक चलाई जा सकेगा यह सरकार की नियम कानून बना दिए गए जबकि सर्वोच्च न्यायालय ने अपने अधिकांश फैसलों में आधार कार्ड को सबसे जोड़ने की आवश्यकता को हर दिन अरबों रुपए की बैंक खातों से होने वाली जालसाजीयों को देखते हुए कानून बुक से मान्यता नहीं दी। परंतु धूर्त पूंजी पतियों का रखैल मोदी सारे आधार कार्ड के नंबर के माध्यम से, लोगों के बैंक खातों पर निगरानी करने की जानकारी इकट्ठी करें उसे आसानी से बड़ी पूंजी पतियों को कमाई का साधन उपलब्ध करवाने के साथ सब की जानकारियां एकत्रित कर अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए उपलब्ध करवाने जानबूझकर कौन बना था जनता को कंगाल करने पर तुला है। इन सब को आपस में जोड़ने से पिछले 10 सालों में लगभग औसतन 3000 से ज्यादा लोगों के खातों से हर दिन करोड़ों रुपए हैकर्स द्वारा निकाले गए। 90% की बैंकों में व पुलिस थानों में शिकायत ही नहीं ली गई । 132 करोड आबादी के देश में, लगभग 50,000 से ज्यादा सरकारी बैंकों की शाखाएं और लगभग 30000 सहकारी बैंकों निजी बैंकों सहकारी साख संस्था की शाखाएं हैं। सर्वोच्च न्यायालय निर्णय देता है। आवश्यक नहीं पर केंद्र सरकार ने हर शासकीय कार्य मैं आधार कार्ड जोड़ दिया है। जबकि हरामखोर नेताओं मंत्रियों पूंजी पतियों के आधार कार्ड नहीं। जनता को लूटने, लुटवाने, स्वयं नोचने, नुचवाने डकैत मोदी खाता खोलने से लेकर हर शासकीय कार्य में आधार कार्ड को आवश्यक कर दिया है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

जनता को लूट कर झूठी तारीफ में बर्बाद किया जन धन

पिछले 5 साल का मोदी का मीडिया पर खर्च की झलक

यहाँ नरेंद्र मोदी से जुड़े पिछले 5 साल के कुछ आंकड़े दे रहा हूँ, जिसे भारत का संविधान हर भारतीय को जानने का मौलिक अधिकार देता है.

नरेंद्र मोदी 60 महीने प्रधानमंत्री रहे. जिसमें 565 दिन यानि 18 महीने 25 दिन विदेश यात्रा पर रहे. 101 दिन यानि 3 महीने 11 दिन पॉलिटिकल यात्राओं पर थे. यानि 565 दिन में कुल 226 दिन वो केवल यात्रा करते रहे. 15 जून 2014 से 3 दिसम्बर 2018 तक मोदी ने 92 देशों की यात्रा की. एक देश की यात्रा पर औसतन 22 करोड़ रूपये खर्च हुआ. 92 देशों की यात्रा पर कुल खर्च 20 अरब 12 करोड़ रूपये हुए. देश में चुनावी रैलियों में मोदी वायुसेना का विमान उपयोग करते हैं. जबकि ये सरकारी यात्रा नहीं होती. इसमें वे वायुसेना के विमान का कमर्शियल रेट (1999 के बाद से रेट रिवाइज नहीं हुए) के हिसाब से मात्र 31000 रूपये भुगतान करते हैं. बताइए देश में इनके आलावा किसे इतने रूपये में चार्टेड प्लेन किराये पर मिलता है?

सत्ता में रहते हुए मोदी सरकार ने 15 मई 2018 तक अलग-अलग योजनाओं के मिडिया में प्रचार-प्रसार पर 43 अरब 43 करोड़ 26 लाख रुपये खर्च किये.

2014-2015

प्रिंट मिडिया ---- 4,24,8500000 (4अरब 24करोड़ 85लाख रूपये)

डिजिटल मिडिया ---- 4,48,9700000 (4अरब 48करोड़ 97लाख रूपये)

आउटडोर ऐडवरटाइजिंग ---- 79,7200000 (79करोड़ 72लाख रूपये)

2015-2016

प्रिंट मिडिया ----- 5,10,6900000 (5अरब 10करोड़ 69लाख रूपये)

डिजिटल मिडिया ----- 5,41,9900000 (5अरब 41करोड़ 99लाख रूपये)

आउटडोर ऐडवरटाइजिंग ---- 1,18,4300000 (1अरब 18करोड़ 43लाख रूपये)

2016-2017

प्रिंट मिडिया ----- 4,63,3800000 (4अरब 63करोड़ 38लाख रूपये)

डिजिटल मिडिया ----- 6,13,7800000 (6अरब 13करोड़ 78लाख रूपये)

आउटडोर ऐडवरटाइजिंग ----- 1,85,9900000 (1अरब 85करोड़ 99 लाख रूपये)

(शेष पृष्ठ 2 पर)

मोदी के खास चेले व चुनावी धन देने वाले

आडाणी की पाकिस्तान को 22 सौ करोड पर प्रतिमाह की बिजली सप्लाई

आखिर अडानी ने मोटा चुनावी चंदा दिया और दे रहा है। इसलिए मोदी पाकिस्तान को झेल रहा है। अब रहा मौतों पर मोदी की नौटंकी का। तो मोदी तो कुछ जन्मजात गुणसूत्रों के साथ पैदा हुआ जैसे गुजराती जन्म से, जाति से तेली, फिर स्टेशन पर बाप-बेटे चाय बेचते थे। चोरी चमारी यात्रियों से मार पीट लूटपाट करना। रेलवे का लोहा बेचना। यह गुण परिवार से मिल गया जब मां का सोना चुरा कर भागा।

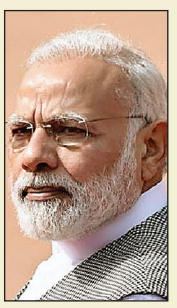

बेचारी को अपने मां बाप का प्यार भी नहीं मिला भाई बहन ने उसके खिलाफ बडोद थाने में रिपोर्ट लिखवा दी।

तो फिर बड़े मवालीयों को टीम में शामिल हो गया तो बेचार पढ़ नहीं पाया। बचने के लिए बेचारा संघ कार्यालय में छुपकर झाड़ू पोछा किया। वहीं सीख उसने पूरे देश में झाड़ पोछा करवा कर सारे उद्योगों में बैंकों में, तेल, रेलवे बीमा कंपनी में झाड़ पोछा लगा दिया। सब अपनी पूंजीपति मित्रों को सौंपने की तैयारी और सौंप दिया कुछ तो

सभी नेताओं को चड्डी बनियान धोने लगा। चड्डी बनियान धोते-धोते सब के दाग इकट्ठे कर लिए जो बाद में टिकट हथियाने में मुख्यमंत्री बनने में प्रधानमंत्री बनने में काम आए।

बेचारा भेड़ियों के साथ रह-रहकर भेड़िया बनकर पूरे देश को नोच रहा है तो क्या गम है। अब ऐसे में बीवी कहां संभालता।

यह फकीरी है, मोदी की

25 लाख का कोट पहनता है, दिन में 4 जोड़ी नये कपड़े बदलने को चाहिए

सत्ता में आते ही 94 से ज्यादा विदेश यात्राएं कर डालीं थी

वह भी किसी सामान्य यात्री जहाज से नहीं अमेरिका के राष्ट्रपति एयर फोर्स वन की तुलना मैं कहीं फकीरी की शान कमजोर ना पड़े। इसलिए अपने लिए भी जन धन से लुटे हुए धन से लगभग रु1200 करोड रुपए का प्लेन खरीद लिया गया।

प्रोटोकॉल के अनुसार जब किसी देश के प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति किसी भी विदेश यात्रा पर जाते हैं। तब उनके जहाज उतारने से लेकर उनकी यात्रा खत्म होने पर जहाज की उड़ान तक वह वह साथ गया विमान चालू हालत में खड़े रखना पड़ता है। यदि हवाई यात्रा चार दिन की हुई 24 घंटे में प्रति घंटे रु10हजार का पेट्रोल विमान में लगातार जलता रहता है। उसे बंद नहीं किया जाता। अर्थात प्रतिदिन रु 2.50 लाख का पेट्रोल, व अन्य खर्चों के साथ उस विमानतल पर प्रति घंटा पार्किंग चार्ज भी लगता है जो लगभग रू5 से 10हजार प्रति घंटा होता है, अर्थात रु6लाख का खर्च वह अलग से प्रधानमंत्री की यात्रा पर होता है।

फकीर है मोदी बेचारा

ब्लेकमेलिंग, लूटपाट डकैती बेचारे का खानदानी धंधा है। बाप बेटे बड़ोद स्टेशन पर चाय बेचते थे।

चाय बेचने की आड़ में यात्रियों से लूटपाट करना रेलवे का लोहा लंगड़ बेचना। बाप दामोदरदास को मात्र 16 महीने की जेल हुई थी। बेचारा पढ़ लिख नहीं पाया। अपने आप को भारी ज्ञानी ध्यानी,पढ़ा-लिखा सिद्ध करने प्रधानमंत्री बनने के बाद फर्जी डिग्री कबाडनी पड़ी बेचारे को।

फिर 14से34 साल की उम्र तक इन्हीं मवालियों के बीच में रहा। छोटी मोटी लूटपाट, दम देना, ब्लैकमेल करना, महीना, हफ्ता वसूल करना। आदि में बहुत पारंगत हो गया।

जब अपराधों के बोझ से भागते भागते जगह नहीं मिली तो बेचारा संघ के कार्यालय में घुस के बड़े बड़े नेताओं की चड्डी बनियान धोने लगा झाड़ू लगाने लगा।

उस में पारंगत हो गया। फिर क्या था। सबका विश्वास जीतने, सब के दाग इकट्ठे करने के बाद पहले बेचारा विधायक का टिकट झटका और विधायक बनकर मुख्यमंत्री बन गया। इन्हीं सभी प्रकार के सभी गुणों के कारण ब्लैक मेलिंग, दम देना, वसूली करना के दम पर प्रधानमंत्री बन गया।

बेचारा आखिर खानदानी भेड़िया प्रधानमंत्री बनते ही भेड़ियों की तरह देश की जनता को नोचने लगा। फिर बेचारा सँघ की झाड़ू लगाते लगाते देश की जनता की जेब पर झाड़ू चला दी बेचारे ने। संघ में रह कर बेचारा मुंह चलाना और मंच पर भाषण के साथ नौटंकी करना बहुत अच्छा सीख गया। झूठ पाखंड मक्कारी हरामखोरी जालसाजी बेचारे की हर आवाज से झलकती है। जनता का पैसा है लूटने के लिए है जनता पर चौगुनी कीमत में पेट्रोल, डीजल, गैस से लूटो

देश के सारे उद्योग धंधों को बीमा बैंकिंग, मीडिया, फुटकर व्यापार को 100% विदेशी निवेश में लाकर कुछ नहीं मात्र 20 30 करोड़ लोगों का व्यवसाय बर्बाद किया बेचारे ने बदले में मोटा कमीशन लिया आखिर भूखा भेड़िया जहां से मिलेगा वहीं से खाएगा न।

अब इस देश की जनता बेचारी हजारों सालों से गुलामों की औलाद वह सबका स्वागत करती है।हूणों, शकों, मुगलों, अंग्रेजों कोई बहुत बड़ी सेना लेकर नहीं आते थे। हमारे पाखंडी अत्यधिक ज्ञानी ध्यानी घोर स्वार्थी मक्कार हिन्दू ही उनका साथ देकर अपने देश पर ही आक्रमण कर बर्बादी करते थे। अर्थात स्वंय अपने को, अपनी समाज को, राष्ट्र को बर्बाद करने में भी ऐसे ही गद्दारों की भीड़ इस देश में कभी कम नहीं हुई। उनका भी स्वागत किया सबका स्वागत किया।

फिर क्या हुआ अगर चुनाव जीतने के लिए सीआरपीएफ के 42 सैनिक मरवा दिए झूठी सर्जिकल स्ट्राइक का नाटक कर दिया तो क्या हो गया हम तो साथियों का निभाते हैं जो झूठ पाखंड और मक्कार होते हैं धन्य हो तीन राज्यों में कांग्रे सोने के बाद क्यों बिजली के बिल आधे हो गए खपत उतनी ही हो रही है। क्यों पेट्रोल डीजल गैस के दाम घटाने पड़ गए नही तो 100/- तक पहुंच गए थे पेट्रोल के, 90/- डीजल के 980 तक गैस सिलेंडर घरेलू मिलने लगा था। रु 1-2 करोड़ 4 करोड़ प्रति किलोमीटर की सड़कें 4 साल में ही 10 करोड़ से

(शेष पृष्ठ 2 पर)